Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research Vol-1, No-1, ***August 2022***
An International Open-access Peer-reviewed Journal **Web:** http://www.knowledgeableresearch.com/

''प्राकृतिक मानवीय प्रवृति, रंगमय सृष्टि एवं कलात्मक सामजस्यता में वर्ण सम्प्रेषण बोध''

डा0 बलबिन्द्र कुमार (शोधार्थी),
अतिथि संकाय (सहायक आचार्य) पहाड़ी चित्रकला ,
अर्न्तबिषयक अध्ययन विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला–05
Email: balbinderkangri9@gmail.com

ABSTRACT:

The tradition of using color in Indian painting has been going on since ancient painting styles. These include Ajanta, Pala, Apabhransh, Mughal, Rajasthani and Pahari styles. In which lines and letters have been used in a very realistic manner and the environment of the picture has been made beautiful, an attempt has also been made to create a three-dimensional effect from the lines. In the journey from Ajanta to Pahari miniature painting, there has been a lot of innovation and development in the varna tradition.

KEY WORDS: ARTISTIC HARMONY, CREATION, COLOR COMMUNICATION

****

सृष्टि में व्यापक भौतिक–अभौतिक स्वरूप से लेकर शून्य तक की रचना में संयोजन विद्यमान है जिसमें ब्रह्माण्डों, खण्डों, सौरमण्डलों, ग्रहों की स्थिति, गति व प्रकाश उर्जा के संचालक सूर्य की उर्जा का समस्त ग्रहों, पिण्डो, उपग्रहों, चन्द्रमा, तारों में समावेश या टकराव व प्रभाव अतः उनसे उत्पन्न परावर्तित प्रकाश से तैयार जगमगाहट भरी रश्मियाँ व रोशनी की हल्की, फीकी, प्रचण्ड, तीव्र, गर्म, शान्त ज्वलन्त, नकरात्मक व सकारात्मक तरंग किरणे यह

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

समस्त सृष्टि सौरमण्डल की पिण्ड संरचना, रूप, स्थिति, अनुपात, एकता, सन्तुलन, प्रवाहित संचालन, गति, काल गणना, उर्जा शक्ति, नाद राग स्वर संगीत जीवन तथा अन्य तत्वों से उत्पन्न दृश्यात्मक, श्रवणात्मक संगति विशाल रूप पर अपनी परिक्रमानुसार अद्भुत दृश्य प्रभाव उत्पन्न करता है अन्तरिक्ष में अनन्त रंग दृश्यवान व ओझल सृष्टि के है वही श्रव्यात्मक मौन नाद राग शब्द है यह समस्त संगति विशाल दृश्य, श्रव्य स्वरूप की एकीकृत संयोजन है।

इस ब्रह्माण्डीय संरचना में शक्ति पुंज जो अति प्रकाशवान तरंगमयी रंगीन रश्मियों का उद्गम्य केन्द्र है इसके प्रकाश में सभी रंग मौजूद है तथा जहां भी यह प्रकाश रश्मियाँ जाती है या किसी भी चीज पदार्थ पर प्रत्यक्ष पड़ती है तो एक तलीस्मी वातावरण तैयार कर देती है जो भौतिक व आध्यात्मिक पहर की होती है।

आपार सृष्टि में पृथ्वी ही एकमात्र ग्रह है जिसमें जीवन विद्यमान है जिसमें मानव जाति सर्वोच्च जीव है अर्थात मानव प्राण में समस्त भेदों के ज्ञान बोध करने की क्षमता ईश्वर ने दे रखी है तथा मानव शारीरिक संयोजन अनमोल है इस सृष्टि के समस्त अंश भाग, अंग–अंग के संसार में ईश्वर का संयोजित स्वरूप सर्वत्र एकीकृत है उदगम्य से अनन्त तक।

सम्पूर्ण सृष्टि में पृथ्वी ग्रह प्राकृतिक तौर पर जीवन्त वातावरण युक्त वनस्पति, जल–थल व इसमें निहित जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, जानवर अन्य जीव प्रजातियाँ जो प्रकृति पर आश्रित है सिर्फ कुछ रंग का अंश देख पाने की क्षमता शक्ति रखते है अतः एकमात्र मानव शरीर ही दृष्टि से समस्त रंगों की तानों तरंग लहरों को प्रत्यक्ष देख पाता है इसलिये मानवीय जीवन आध्यात्मिक खोजमें आन्तरिक व बाहरी भौतिक संरचना की वर्ण संयोजना के दृश्य बोध से साक्षात्कार कर पाता है।

रंगों की उत्पति या सृष्टि हेतु इसके संयोजित भेद को जानना आवश्यक है जिसमें आपार मौन भाषा, गतिशील निरन्तर संचालित प्रकाशवान ब्रह्माण्ड व इसके बीच सन्तुलित अन्तराल में गतिशील पृथ्वी व इसके प्राणवान जीव जगत इन तीनों क्षेत्रों के मध्य का साक्षात्कार वर्ण सम्प्रेषण जो गुरूत्वाकर्षण, निरन्तर गतिशीलता, मौन राग से उत्पन्न अनगिनत रंगीन रश्मियों के माध्यम से दृष्टि, प्रविष्टि, समष्टि, पुष्टि तथ सृष्टि के बोधात्मक चरणों में नियमित विचरण प्रवाहित रहती है।

वहीं मनुष्य में अनोखा उसकी शारीरिक संरचना पाँच तत्वों –अग्नि, जल, वायु, मिट्टी, आकाश का संयोजित गठन योग है जिसके भीतर शक्ति पुंज 'नाद ब्रह्म' पुंज शक्ति है। जो प्राण व अग्नि के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है। नकार प्राणजीव है तथा दकार अग्निजीव है जिसका मानवीय शरीर की संयोजित योग में जीवन्तता प्रवाहित करता है जो सन्तुलित है जिसमें अनोखा गुरूत्वाकर्षण, सम्प्रेषण, आत्मसाक्षात्कार, ब्रह्माण्डो, कालों की परिक्रमा करने की क्षमता निहित है इस शरीर में सम्प्रेषण बोध के कारक जो मानवीय मन, बुद्धि, हृदय, निर्णायक क्षमता, चिन्तन, मन्थन रूप में क्रियात्मक प्रवाहित होती है। मानवीय स्वभाविक इन्द्रियबोध–देखने, सुनने, सुगन्ध लेने, स्पर्श, स्वाद से रस, भाव रूप में आत्मसात करने की बोध शाक्तियाँ है प्रकृति में विलिन बाहरी आन्तरिक रंगीन जगत को देख पाने की क्षमता विद्यमान है जिसमें प्राकृतिक प्रकाशवान जगमगाहट से युक्त सात रंगों व सात सुरों का दृश्य, श्रव्य भाव रसपूर्ण रंग प्रेरणा युक्त अभिव्यक्ति की क्षमतायें है मानवीय चिन्तन में चेतन, अर्धचेतन, अवचेतन तीन अवस्थायें होती है जो भावों स्थायी भावों, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी साथ ही श्रुतियों की प्रवृति से जुड़ी होती है मानवीय दृश्य, श्रव्य के साक्षात्कार पर समस्त रंगों, रसों का बोध जागृत होता

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

है। मनुष्य जीवन का रंगीन सृष्टि से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है जहां वह रंगों के माध्यम से देखता परखता आत्मसात करता एवं अभिव्यक्त करता है रंग ही वह भाषा प्रतीक है जो मानव जीवन कें प्रत्येक चरण में उसको समस्त ज्ञान का दृश्य बोध करवाते है।

इन समस्त वर्ण सिद्धान्तों से साबित होता है कि वर्ण मानवीय जीवन की सर्वोच्च भाषा है जिसकी संयोजन क्षमता मानवीय स्वभाविकता को छिन्न–भिन्न भी कर सकती है तथा आनन्दित भी कर सकती है। वही ''रंग–चिकित्सा'' विज्ञान द्वारा मानवीय जीवन को स्वस्थ भी किया जाता है। रंग मानव जीवन का अभिन्न अंग है।

मानवीय दृष्टि संयोजन में आंखों के भीतर रेटिना नामक भाग में रोड्स व कोन्स दो ग्रन्थियां होती है तथा जब यह किसी प्रकाश पुंज के साक्षात्कार प्रभाव सम्पर्क में आती है तो सम्प्रेषणीय दृश्यबोध के साथ–साथ पदार्थ तत्व बोध, रस, भाव सहित वर्ण बोध अवशोषित करती है जो चेतन से प्रवेश करता है इसी माध्यम से पदार्थ की प्रतीति के साथ उसमें प्राणवान शक्ति पुंज का बोध भी आत्मसात किया जाता है परन्तु यह मानवीय चैतन्य पराकाष्ठा की सिद्धि पर ही निर्भर करता है।

रंग या वर्ण जो किसी पदार्थ में संयोजित तत्व अंश की संगति में प्रवाहित प्राण या गुरूत्वाकर्षण संयोग एवं बाहरी ब्रह्माण्डीय रश्मियों के सम्पर्क से उत्पन्न नवीन दृश्य रंग सृष्टि जो पदार्थ को अन्य से भिन्न करता है यह भिन्नता तत्व के रूप, आकार, बनावट, प्रकृति, प्रवृति से प्रतीत होती है।

रंग, रेखा, रूप की त्रिवेणी मेंवर्ण की ही प्रधानता पायी जाती है रेखाओं के रस, भाव, रंगों, स्वरों के अनुरूप प्रवाह से विषय आधारित चित्र प्राक्ट्य होता है वहीं रेखा व रंग की तान, लय, कोमलता, मान, ताल, संचालन, स्वरो की सरगम जैसी ताल तथा भावूपूर्ण रंगतो से रूप, आकृति, चरित्र, चित्र पात्र, समस्त भेदों, प्रमाणों, प्रतीकों एवं चित्रित प्राकृतिक वातावरण का संयोजित जीवन्त व साक्षात दृश्य रूप तैयार किया जाता है।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अन्तर्गत चित्रसूत्रम् में काव्य, संगीत, चित्र आदि का एक ही दृष्टिकोण से वर्णन हुआ है इसमें चित्र के रंगों का सम्बन्ध स्थापित किया गया है व मूलरंग पांच माने गये है यथा–

मूलरंगाः स्मृताः पंच श्वेतः पीतोविलोमतः।

कृष्णोनीलश्चराजेन्द्र शतशोऽन्यरसाः स्मृताः।।

यहां पांच मूल रंग–श्वेत, पीला, विलोमत (पीलापन लिये हुये सफेद), श्याम तथा नीला है। वर्ण की महत्वता के बारे में विशेष है–

"वर्ण ज्ञानं यदा नास्ति किं तस्य जप पूजर्ने"

यद्यपि प्रमुख वर्ण पाँच प्रकार के माने गये हैं। किन्तु इनके समिश्रण से सैकड़ो–उपवर्णों की सृष्टि होती है। वातावरण में पाये जाने वाले पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, वृक्ष, लता आदि विभिन्न प्रकार के चित्रों में रंगों का उचित प्रयोग होना चाहिये। कलाकार के लिये रंग का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसमें रूप एवं तत्व को भी जानना होगा। इसी प्रकार सूर्य की किरणों का

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

रंग दिखा देना ही पर्याप्त न होगा। बल्कि उसमें सुबह, दोपहर और संध्या के समय सूर्य के उत्ताप को दिखाना है। इसलिये वर्णिका भंग चित्र के षडंगों में सबसे कठिन साधना होती है। इसलिये भारतीय चित्रकला में चित्रण विधान के (षडंग) छः अंगो में मुख्यतः

1) रूपभेदाः 2) प्रमाणानि 3) भाव

4) लावण्योजन् 5) सादृश्य 6) वर्णिका भंग आदि चित्र अंग है।

रूपभेदाः प्रमाणानिभावलावण्ययोजनम्।

सादृश्यं वर्णिकाभंगइतिचित्र षंडगकम्।।

भारतीय चित्रण विधान में इन प्रमुख छः अंगों में वर्णिका भंग अन्तिम छठा अंग है चित्र विधि विधान में प्रत्येक विषय वस्तु को इन छः अंग सिद्वान्तों के आधार पर संयोजित किया जाता है सर्वप्रथम विषय आधारित रूप व उस के भेद का रेखांकन होता है साथ ही इस चित्र के समस्त पात्रों, अंगों, पृष्ठभूमि व वातावरण में चरित्रिक भावो का समावेश किया जाता है उसके उपरान्त चित्र की समस्त सृष्टि के अन्तर्गत सन्तुलन, लय, समाज्यस्ता, एकता, संगीत एक सुर या एक विषय पर केन्द्रित भाषा चित्रित की जाती है जो लावण्य के अन्तर्गत आता है वहीं सादृश्य में प्राकृतिक तालमेल, समानता, एकरूपता व अनुकरण जैसी विद्या का समावेश किया जाता है इन पांच चरणों में अत्यन्त महत्वपूर्ण छठा अंग–वर्णिकाभंग से चित्र को पूर्ण किया जाता है यही वह अंग है जिसके समावेश के बिना कोई भी चित्र पूर्ण व जीवन्त नहीं माना जाता वर्णिकाभंग के अर्न्तगत रंग योजना उसकी संयोजन विधि की सृष्टि जुड़ी होती है जिसमें अनगिनत रंगों व उपरंगो का निर्माण चित्र विषय पर आधारित तैयार किया जाता है तथा तुलिकाओं के माध्यम से वर्ण को चित्र पर विधिवत् बिछाया जाता है, वर्ण योजना के इस अंग में चित्रकार का विषय बोध अत्यन्त सिद्ध होना चाहिये ताकि रंगतो की बनावट उनकी स्वभाविकता, प्रकृति व प्रवृत्ति चित्र विषयों के अनुकूल हो, वर्ण ही वह प्राणरस है जो बेजुवान चित्रित रचना में दृष्टि सम्प्रेषण तैयार करता है तथा किसी भी पात्र या चरित्र की स्वाभाविकता, मानसिकता, पहर, गहनता, यथार्थता, आत्मा को जीवन्तता प्रदान कर दृश्य बोध करवाता है। मानवीय–सृष्टि का आकषर्ण सौन्दर्य है तथा सौन्दर्य का रस रंग है अतः चित्र सृष्टि में वर्ण ही एकमात्र तत्त्व है जो चित्रकार, चित्र व दर्शक को एक सौन्दर्यसूत्र में बांधकर आत्मानन्दानुभूति प्रदान करता है।

तीन वर्ण मुख्यतः लाल, पीला, नीला प्राथमिक रंग है जिनके मिश्रण से अन्य द्वितीय तीन रंग नांरगी, हरा, जामुनी बनते है तथा प्राथमिक व द्वितीय रंगों के समिश्रण से तृतीय रंग बनते है यह समिश्रण प्रक्रिया इतनी विशाल है कि एक स्तर पर पहुंचते–पहुंचते समस्त रंगते मिलकर सफेद रूप धारण कर लेती है मनुष्य ने प्रकृति के रंगीन सयोजन से प्रेरित होकर वनस्पतिक, खनिज, रासायनिक आदि प्राकृतिक रंगों को संसाधनों से प्राप्त कर प्रयोग में लाया व चित्रित जगत की रचना की। कलाकार जो अभिव्यक्ति के माध्यम से सर्वसाधारण मे विशेष है अपनी रचना से साधारण मानवीय जगत को प्रभावित करता है इसी उद्देश्य से चित्रकला के क्षेत्र में भी रंगों का प्रयोग तन्त्र विद्या, ज्योतिष विद्या, आध्यात्मिक चरणवद्ध प्रतीकों व अन्य विशाल विषयों को दृश्यवान संयोजित कर अभिव्यक्त किया गया है।

मनुष्य द्वारा देखने व सुनने के माध्यम से उसका छिपा हुआ भाव स्वरूप जो चेतन अवस्था के अन्तर्गत स्मरण, कल्पना, या प्राकृतिक दृश्य का संग्रह, प्रतीकों छिपे हुये ज्ञान का

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

दृष्टान्त बोध होता है इसके उपरान्त विभाव, अनुभाव आदि द्वारा पुष्ट होकर रस में परिणत होता है जो नौ रसों में व्यक्त होता है। जिनकी श्रृंगार, हास्य, रौद्र, करूण, वीर, अद्भुत, वीभत्स, भयानक आदि रूप में अनुभूति होती है।

दृश्य श्रव्य स्त्रोत से उत्पन्न रंग, राग, रस के प्रभाव आकर्षण का अवशोषण से अभिव्यक्ति तक चरणः–

- दृश्य–श्रव्य रस स्त्रोत पदार्थ का निजी रंग, राग, रसयुक्त प्रभाव उद्गम्य से आकर्षण, गुरूत्वाकर्षण या विपरीत साक्षात्कार सम्प्रेषण प्रक्रिया
- दर्शक या प्राप्तकर्ता में अवशोषित रंग, राग, रस भाव जागरण से चिन्तन–मन्थन की प्रक्रिया
- तत्व ज्ञान–बोध से रसानन्द या रसास्वादन प्राप्ति
- उपरोक्त तीन चरणों की प्रक्रिया का कलाकार/चित्रकार द्वारा स्थायी अभिव्यक्ति करके प्रस्तुत करना।

इस प्रकार वर्ण विभिन्नता के साथ–साथ मानवीय चारित्रिक वर्ण आकर्षण क्षमता व पसन्द वैयक्तिक होती है इसी व्यक्तिगत स्वभाविकता के कारण चित्रकारों की वर्ण योजना भी वैयक्तिक होती है परन्तु विषय सिद्धान्त के अनुसार रंगों की चयन सीमायें समान रहती है।

वर्ण–रस, भावों, श्रुतियों के द्वारा चेतन अवस्थाओं, भाव सम्पर्क से पुष्टिकरण उपरान्त रस, रंग, राग से संयोजित छवि स्थाई आनन्द प्रदान करते है।यह वैयक्तिक कलात्मक भिन्न अभिव्यक्त होते है यह निर्भर करता है कि मानवीय वैयक्तिक मानसिक, आत्मीय, व शारीरिक विकास व वृद्धि किस परिस्थिति में हुई है या वातावरण में कुछ स्थाई गुण या भाव जो जन्मजात रहे होते है जो मानवीय आन्तरिक पुष्टि–मन्थन के समय सब वैयक्तिक मूल्यांकन में भूमिका निभाते है जिससे अभिव्यक्ति के बाद रंगों, रसों, भावों, रागों स्वरों में भिन्नता पायी जाती है तथा जो वैयक्तिक अभिव्यक्ति सम्पूर्ण रूप से शुद्ध सर्वोच्च व सत्यता से सुन्दरबोध करवाती हुई प्रकट होती है वही समस्त जगत को भाती है परन्तु जहाँ वैयक्तिक रचना या कल्पना या भौतिक सोच सहित पुष्टिकरण युक्त अभिव्यक्ति होती है वहाँ उसका आनन्द वह व्यक्ति स्वयं ही लेता है या बहुत कम ही उसको पसन्द करते है अर्थात् सर्वोच्च अभिव्यक्ति वही है जो वास्तविक सूक्ष्म ज्ञान, तत्व ज्ञान, से आत्मसात् होकर व वास्तविकता से युक्त रंगों, छंदों, रागों , धुनों, स्वरों, सुरो, सूत्रों से एकीकृत रूप से प्रकट दृश्यवान हो यही वह रचना है जो देखी सुनी पढ़ी जाती है जो समस्त को आनन्दित करती है वही एक अनुकरण तो कलाकार रचनाकार के माध्यम से हुआ ही है परन्तु व स्वयं भी देखने, पढ़ने, सुनने के सूक्ष्म ज्ञान से सर्वप्रथम आनन्दित होता है तथा उसके अन्दर से प्राकृतिक कल्पना समावेश, मन्थन, पुष्टि करके अभिव्यक्ति होती है यह एक विशेष व अनोखा कला जगत है जिसमें आम आदमी या व्यक्ति उन समस्त सूक्ष्म व तत्व ज्ञान को नहीं भेदकर झाँक सकता परन्तु वहाँ चित्रकार ही इन शक्तियों, ऊर्जाओं, रूपों, अदृश्य संसार में निहित ज्ञान को दुनिया के समक्ष दृश्यवान् रंगीन सृष्टि में अभिव्यक्त करके उसी ज्ञान रहस्य से परिपूर्ण उसी भाव, रस, राग, रंग की सृष्टि की वर्ण प्रतिशतता द्वारा दुनिया को चित्रित दृश्यबोध करवाता है।

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

इस सौन्दर्यानुभूति को व्यक्त करने के लिये विभिन्न कला माध्यमों का प्रयोग मानव पीढ़ी, दर–पीढ़ी करता चला आया है। कला की अभिव्यक्ति के क्षेत्र में भारतीय चित्रकला अत्यन्त समृद्ध एवं वैभवशाली रही है।

भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान रही है जिसमें प्राकृतिक वर्ण परम्परा का विशिष्टतम् महत्व रहा है जिस प्रकार संगीत लय के बिना काव्य रस के बिना तथा कविता शब्द के बिना अपूर्ण है। उसी प्रकार चित्र में रंग वर्ण का होना आवश्यक है गुहावासियों ने प्राकृतिक सामग्री द्वारा अपने चित्रों में वर्ण स्वरूप को ढाला। अतः प्राचीन काल से मानव अब तक वर्ण निर्माण व प्रयोग हेतु नित नवीन अन्वेषण करता रहा है।

भारतीय चित्रकला में वर्ण प्रयोग की परम्परा प्राचीन चित्र शैलियों से चली आ रही है। इनमें अजन्ता, पाल, अपभ्रंश, मुगल, राजस्थानी तथा पहाड़ी शैलियां शामिल हैं। जिनमें रेखाओं, वर्णों का बड़ा यथार्थवादी ढंग से प्रयोग हुआ है तथा चित्र वातावरण को सौन्दर्ययुक्त बनाया गया है वर्ण रेखाओं से त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करने का भी प्रयास किया है। अजन्ता से पहाड़ी लघु चित्रकला तक के सफर में वर्ण परम्परा में बहुत नवीनता तथा विकास हुआ है। भारतीय लघु शैलियों में वनस्पति, खनिज तथा रासायनिक रंगों का प्रयोग होता है तथा पहाड़ी लघु शैलियों में यह वर्ण परम्परा आज भी जीवन्त है। पहाड़ी शैलियों में मुख्यतः कश्मीर शैली, जम्मू शैली, वसोहली, चम्बा, नुरपुर, गुलेर, काँगड़ा, मण्डी, कुल्लू, बिलासपुर, सिक्ख व गढ़वाल शैली आदि हैं। इन सभी पहाड़ी शैलियों की भिन्न भिन्न वर्ण संयोजन परम्परा रही है परन्तु वर्ण योजना की परम्परागत विधि एक ही है। इसीलिये अपनी विशिष्ट वर्ण परम्परा के आधार पर पहाड़ी शैली भारतीय चित्रकला में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- द्विवेदी प्रेमशंकर : दूबे बिन्दू '' चित्रसूत्रम् (विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्रकला)
- नन्दलाल बोस ''दृष्टि और सृष्टि'' पृ.सं –13 से 17., वही स. –59।
- ओहरी वि०सी०– द तकनीक ऑफ पहाड़ी पेंटिग– 2001
- किशोरी लाल वैद्य, ओमचंद हाड़ा– पहाड़ी चित्रकला, 1969, दिल्ली
- गोस्वामी बी०एन० –पहाड़ी पेंटिगस : द फेमिली एस बेसिस ऑफ स्टाइल– मार्ग 21:4–1968
- द्विवेदी प्रेमशंकर : दूबे बिन्दू '' चित्रसूत्रम् (विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्रकला), काशी हिन्दू वि0 वि0 वाराणसी–5, 1999
- सुमहेन्द्र, महेन्द्र कुमार शर्मा– राजस्थानी रागमाला चित्र–परम्परा ,पब्लिकेशन स्कीम जयपुर, भारत, 1990,